# वेदाध्ययनम् (Veda Adhyayan) (345)

**परीक्षासमयावधिः (Time) होरात्रयम् (3 Hrs)** **पूर्णाङ्काः (Full Marks) - 100**

**निर्देशाः -**

1) अस्मिन् प्रश्नपत्रे [A] भागे 20, [B] भागे 15, [C] भागे 6, [D] 6, [E] 4 इति आहत्य 51 प्रश्नाः सन्ति।
2) समे प्रश्ना अनिवार्याः।
3) प्रत्येकं प्रश्नस्य दक्षिणे पार्श्वे संख्यासु (अङ्काःxप्रश्नाः=पूर्णाङ्काः) इति अङ्काः दीयन्ते।
4) A भागे प्र.सं. 1 तः 20 पर्यन्तं – वस्तुनिष्ठ/बहुविकल्पप्रकारस्य प्रश्नाः (MCQs) येषु प्रत्येकं एकः अंकः भवति। एतेषु प्रत्येकस्मिन् प्रश्ने दत्तचतुर्णां विकल्पानां मध्ये सर्वाधिकं उपयुक्तं विकल्पं चित्वा लिखन्तु।
5) B भागे प्र.सं. 21 तः 35 पर्यन्तम् – वस्तुनिष्ठप्रश्नाः/ मेलनम्,रिक्तस्थानानि,सत्यम्- असत्यम् इत्यादि। प्रत्येकं प्रश्नः अंकद्वयात्मकः अस्ति। ते यथानिर्देशं समाधेयाः।
6) C भागे प्र.सं. 36 तः 41 पर्यन्तम् अतिलघूत्तरियाः प्रश्नाः प्रत्येकम् अंकद्वयात्मकाः सन्ति। ते यथानिर्देशं 30 तः 50 शब्दानां परिधिमध्ये समाधेयाः।
7) D भागे प्र.सं. 42 तः 47 पर्यन्तम् अनतिदीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः प्रत्येकम् अंकत्रयात्मकाः सन्ति। ते यथानिर्देशं 50 तः 80 शब्दानां परिधिमध्ये समाधेयाः।
8) E भागे प्र.सं. 48 तः 51 पर्यन्तम् दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः प्रत्येकम् पञ्च अंकात्मकाः सन्ति। ते यथानिर्देशं 80 तः 100 शब्दानां परिधिमध्ये समाधेयाः।
9) स्वस्य उत्तरपत्रे प्रश्नपत्रस्य गूढसंख्या नूंन लेख्या।
10) उत्तरपत्रे आत्मपरिचयात्मकं लेखनम् अथवा निर्दिष्टस्थानं विहाय अन्यत्र क्कापि अनुक्रमाङ्कलेखनं सर्वथा वर्जितमस्ति।
11) समेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि निर्धारितसमये एव लेख्यानि।
12) निरीक्ष्यताम् यत् प्रश्नपत्रस्य पुटसंख्या प्रश्नानां च संख्या प्रथमपुटस्य प्रारम्भे प्रदत्तसंख्या समाना न वा। प्रश्नक्रमः सम्यग् न वा।
13) अनुक्रमाङ्कः प्रश्नपत्रस्य प्रथमपुटे नूनं लेख्यः।

**[A] विशतिप्रश्नानां (1-20) प्रदत्तविकल्पेषु युक्तं विकल्पं चिनुत।**

1. कस्य वेदस्य ब्रह्मवेदः इत्यभिधानम्। 1

(क) ऋग्वेदस्य (ख) सामवेदस्य (ग) यजुर्वेदस्य (घ) अथर्ववेदस्य।

2. दिवसानाम् अधिपतिः कः देवः। 1

(क) मित्रः (ख) वरुणः (ग) इन्द्रः (घ) रुद्रः।

3. अथर्वपदे थर्व-धातुः कस्मिन् अर्थे वर्तते। 1

(क) कौटिल्यार्थे (ख) अहिंसार्थे (ग) स्थैर्ये (घ) सम्पुष्टौ।

4. अथर्ववेदे तक्माः इति कस्य अभिधानम्। 1

(क) ज्वरस्य (ख) यक्ष्मारोगस्य (ग) दन्तपीडायाः (घ) गण्डमालायाः।

5. रक्षासूत्रधारणं पूर्णस्वास्थ्यकारकम् इति कुत्र वर्णितम्। 1

(क) आयुष्यसूक्तेषु (ख) पौष्टिकसूक्तेषु (ग) भैषज्यसूक्तेषु (घ) प्रायश्चित्तसूक्तेषु।

6. मानसिकत्रुटिनिराकरणं कुत्र वर्णितम्। 1

(क) आयुष्यसूक्तेषु (ख) पौष्टिकसूक्तेषु (ग) भैषज्यसूक्तेषु (घ) प्रायश्चित्तसूक्तेषु।

7. कर्मणः मन्त्राणां च व्याख्यानेन किं बुध्यते। 1

(क) उपनिषद् (ख) आरण्यकम् (ग) ब्राह्मणम् (घ) संहिता।

8. 'स नः पवस्व शङ्गवे' इति ऋक् किंसम्बद्धा। 1

(क) पशुरोगनिवृत्त्यर्था (ख) दीर्घरोगनिवृत्त्यर्था (ग) बुद्धिप्रकाशार्था (घ) शत्रुदमनार्था।

9. 'शन्नो देवीरभीष्टये' इति केन दृष्टः कस्य वेदस्य प्रथममन्त्रः। 1

(क) पिप्पलादेन अथर्ववेदस्य (ख) वैश्वामित्रेण यजुर्वेदस्य

(ग) अथर्वणा अथर्ववेदस्य (घ) भारद्वाजेन यजुर्वेदस्य।

10. किमर्थसूचकः ब्राह्मणशब्दः नपुंसकलिङ्गे प्रयुज्यते। 1

(क) द्विजसूचकः (ख) वेदभागसूचकः (ग) ब्रह्मसूचकः (घ) ग्रन्थसूचकः।

11. धातोः अन्तस्य कः स्वरः विधीयते। 1

(क) उदात्तः (ख) अनुदात्तः (ग) स्वरितः (घ) प्रचयः।

12. फिट् इति कस्य संज्ञा। 1

(क) आगमस्य (ख) धातोः (ग) प्रातिपदिकस्य (घ) निपातस्य।

13. सुपः कः स्वरो भवति। 1

(क) उदात्तः (ख) अनुदात्तः (ग) स्वरितः (घ) प्रचयः।

14. 'कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः' इत्यत्र कर्षात्वतः इति पदम्। 1

(क) प्रथमाबहुवचनान्तम् (ख) द्वितीयाबहुवचनान्तम्

(ग)पञ्चम्येकवचनान्तम् (घ)षष्ठ्येकवचनान्तम्।

15. स्वाहेति शब्दः कीदृशः। 1

(क) आद्युदात्तः (ख) अन्तोदात्तः (ग) सर्वानुदात्तः (घ) मध्योदात्तः।

16. समासस्य अन्तः किं भवति? 1

(क) उदात्तः (ख) अनुदात्तः (ग) स्वरितः (घ) प्रचयः।

17. हि च इत्यत्र हि इति किम्? 1

(क) विधिसूत्रम् (ख) छन्द: (ग) अव्ययपदम् (घ) कारकम्

18. ऋग्वेदस्य प्रथमं सूक्तम् किं अस्ति। 1

(क) इन्द्रसूक्तम् (ख) अग्निसूक्तम् (ग) पुरुषसूक्तम् (घ पृथिवीसूक्तम्

19. अक्षसूक्तस्य संख्या का। 1

(क) 10।34 (ख) 10।44 (ग) 10।54 (घ) 10।30

20. जीरदानुः इति पदस्यार्थः कः। 1

(क) क्षिप्रदानः (ख) जनयिता (ग) मृदुदानः (घ) तर्पयिता।

**[B] पंचादशप्रश्नानां (21-35) यथानिर्देशम् उत्तराणि लिखत।**

**21. मेलनम् कुरु** 2

**(i).** धातुस्वर: (क) आद्युदात्तः

(ख) अन्तोदात्तः

(ii). श्वसन्ति इत्यत्र आद्युदात्तत्वं सूत्रस्य उदाहरणम्। (ग) स्वपादिर्हिंसामच्यनिटि

22. **मेलनम् कुरु** 2

**(i).** बलिः इति सूत्रस्य उदाहरणम्। (क) तृणधान्यानां च द्व्यषाम्

(ख) ह्रस्वान्तस्य स्त्रीविषयस्य

(ii). काशाः इति सूत्रस्य उदाहरणम्। (ग) तृणधान्यानां च द्व्यषाम्

**23. मेलनम् कुरु** 2

(i). क्व नूनम् इति सूत्रस्य उदाहरणम्। (क) अगिधातुः

(ख) तित्स्वरितम्

(ii). अग्निः इत्यत्र धातुः (ग) अजिधातु:

**24. मेलनम् कुरु** 2

(i). मरुतः जलं प्रयच्छन्तु। (क) गृहाण

(ख) अन्तरिक्षलोकात्

(ii). गृभाय इति पदस्यार्थः। (ग) गर्जय

25. **मेलनम् कुरु** 2

(i). शिवसङ्कल्पसूक्तस्य ऋषिः। (क) आदित्ययाज्ञवल्क्यः

(ख) नारायणः

(ii). अक्षसूक्तस्य ऋषिः (ग) ऐलूषकवषः

**26. निम्नलिखितवाक्यानि पठित्वा सत्यं असत्यं च चिनोतु।** 2

अ. अ॒ग्निमीळे इत्यत्र अकारः उदात्तः। सत्यम्/असत्यम्

ब. ईकारस्य उपरि विद्यमाना रेखा स्वरितस्य सूचिका। सत्यम्/असत्यम्

**27. निम्नलिखितवाक्यानि पठित्वा सत्यं असत्यं च चिनोतु।** 2

अ. अतिङन्तात् पदात् परं तिङन्तं सर्वम् अनुदात्तं भवति। सत्यम्/असत्यम्

ब. अङ्गेत्यनेन युक्तं तिङन्तम् अनुदात्तं भवति। सत्यम्/असत्यम्

**28. निम्नलिखितवाक्यानि पठित्वा सत्यं असत्यं च चिनोतु।** 2

अ. अपसः इति पदस्यार्थः सदा कर्मनिष्ठाः। सत्यम्/असत्यम्

ब. जनिष्यमाणः इत्यत्र कानच् प्रत्ययः। सत्यम्/असत्यम्

**29. निम्नलिखितवाक्यानि पठित्वा सत्यं असत्यं च चिनोतु।** 2

अ. न्युप्ताः इति पदस्य व्युत्पत्तिः नि-वप्+क्त+प्रथमाबहुवचनम्। सत्यम्/असत्यम्

ब. 'अक्षास इदङ्कुशिनो नितोदिनो' इति मन्त्रे पंक्ति छन्दः। सत्यम्/असत्यम्

**30. निम्नलिखितवाक्यानि पठित्वा सत्यं असत्यं च चिनोतु।** 2

अ. 'अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः' इति मन्त्रे पङ्क्तिः छन्दः। सत्यम्/असत्यम्

ब. 'येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्' इति मन्त्रे त्रिष्टुप् छन्दः। सत्यम्/असत्यम्

**31. निम्नलिखितवाक्यानि पठित्वा सत्यं असत्यं च चिनोतु।** 2

अ. या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूरघो॒राऽपापकाशिनी। अस्य मंत्रस्य रुद्रो देवता। सत्यम्/असत्यम्

ब. ईमहे- ई-धातोः आत्मनेपदिनः लट्-लकारस्य उत्तमपुरुषस्य एकवचने रूपम्।

सत्यम्/असत्यम्

32. रिक्तस्थानं योग्यपदेन पूरयत – 2

रथीव .............. अभिक्षिपन् इत्यादिमंत्रस्य .......... छंदः।

33. रिक्तस्थानं योग्यपदेन पूरयत – 2

अ. अभि-अव-हृ+लेट् मध्यमपुरुषैकवचनम् = ................।

ब. कनिक्रदत्- ........... -धातोः यङ् तुङन्ते प्रथमापुरुषैकवचने रूपमिदम्।

34. रिक्तस्थानं योग्यपदेन पूरयत – 2

अ. चक्रे- आत्मनेपदिनः ...........-धातोः लिटि प्रथमपुरुषैकवचने।

ब. इन्धते - इन्ध-धातोः लट्-लकारस्य .......... पुरुषस्य एकवचने रूपम्।

35. रिक्तस्थानं योग्यपदेन पूरयत – 2

अ. सोमशिताः- ....................इति सूत्रेण अत्र पूर्वपदप्रकृतिस्वरः।

ब. आगमन् अत्र लृदित्वात् ..................।

**(C) षण्णां प्रश्नानां यथानिर्देशम् उत्तराणि लिखत।**

36.'आत्मानं रथिनं विद्धि' इति मन्त्रः क्वोपलभ्यते **वा** मन्त्रं सम्पूर्णं लिखत। 2

37. पर्शुशब्दः अन्तोदात्तश्चेत् किं रूपं भवति। **वा** अयं नियमः कस्यां शिक्षायाम् उपलभ्यते। 2

38. समासस्य अन्तस्य किं भवति। तत्र च विधायकं किं सूत्रम्। 2

39. 'हि च' इति सूत्रस्य अर्थम् उदाहरणं **वा** लिखत। 2

40. रुद्रदेवस्य तनूः कीदृशी। तया स किं कुर्यात्। 2

41. 'यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूवुः' इत्यत्र यत्पदेन कस्य ग्रहणम्। कृष्टयः इति शब्दस्यार्थः कः। 2

**(D) षट् अनतिदीर्घोत्तरैः समाधत्त।**

42. आरण्यकम् आश्रित्य टीका लेख्या। 3

43. 'पूर्वे भूतपूर्वे' इति सूत्रं 'वा भुवनम्' इति सूत्रं वा व्याख्यात। 3

44. तिङन्तस्वरे अनुदात्तस्वरनिषेधकं सूत्रत्रयं सार्थं लिखत। 3

45. रत्नधातमम् इति शब्दयुक्तं मन्त्रं पूरयत। अथवा अस्य पदस्य व्युत्पत्तिः लेख्या। 3

46. 'असंबाधं मध्यतो मानवानाम्' इति मन्त्रं प्रपूरयत अथवा सरलार्थो लेख्यः। 3

47. इच्छन्ती, आनट् आवत् इति पदत्रयस्य व्युत्पत्तिः लेख्या। 3

**(E) चत्वारः दीर्घोत्तरैः समाधेयाः।**

48. केनोपनिषद उपनिषत्संज्ञां प्रतिपाद्य प्रतिपाद्यं विषयं वर्णयत। अथवा शिक्षाशास्त्रस्य उपयोगितां वर्णयत। 5

49. आहो उताहो इत्येताभ्यां युक्तस्य तिङन्तस्य अनुदात्तत्वनिषेधः केन सूत्रेण। तत् सूत्रं समासेन व्याख्यात। अथवा अग्निसूक्तदिशा अग्निस्वरूपं व्याख्यात। 5

50. 'नमस्ते रुद्र मन्यव' इति मन्त्रं प्रतिपादयत। 5

41. पृथिवीसूक्तस्य सारं वर्णयत। 5

--)(O)(--

वेदाध्ययनम् (Veda Adhyayan) (345)

परीक्षासमयावधिः (Time) होरात्रयम् (3 Hrs) पूर्णाङ्काः (Full Marks) – 100

## Marking Scheme

| S.N | Answer | Marks |
|---|---|---|
| 1. | (घ) अथर्ववेदस्य। | 1 |
| 2. | (क) मित्रः | 1 |
| 3. | (क) कौटिल्यार्थे | 1 |
| 4. | (ख) यक्ष्मारोगस्य | 1 |
| 5. | (क) आयुष्यसूक्तेषु | 1 |
| 6. | (घ) प्रायश्चित्तसूक्तेषु | 1 |
| 7. | (ग) ब्राह्मणम् | 1 |
| 8. | (क) पशुरोगनिवृत्त्यर्था | 1 |
| 9. | (क) पिप्पलादेन अथर्ववेदस्य | 1 |
| 10. | (ख) वेदभागसूचकः | 1 |
| 11. | (क) उदात्तः | 1 |
| 12. | (ग) प्रातिपदिकस्य | 1 |
| 13. | (ख) अनुदात्तः | 1 |
| 14. | (घ)षष्ठ्येकवचनान्तम् | 1 |
| 15. | (क) आद्युदात्तः | 1 |
| 16. | (क) उदात्तः | 1 |
| 17. | (ग) अव्ययपदम् | 1 |
| 18. | (ख) अग्निसूक्तम् | 1 |
| 19. | (क)10।34 | 1 |

| | | |
|---|---|---|
| 20. | (क) क्षिप्रदानः | 1 |
| 21. | **(i).** (क) आद्युदात्तः<br>(ii). (ग) स्वपादिर्हिंसामच्यनिटि | 2 |
| 22. | **(i).** (ख) ह्रस्वान्तस्य स्त्रीविषयस्य<br>(ii). (ग) तृणधान्यानां च द्व्यषाम् | 2 |
| 23. | **(i).** (ख) तित्स्वरितम्<br>(ii). (क) अगिधातुः | 2 |
| 24. | **(i).** (ख) अन्तरिक्षलोकात्<br>(ii). (क) गृहाण | 2 |
| 25. | **(i).** (क) आदित्ययाज्ञवल्क्यः<br>(ii). (ग) ऐलूषकवषः | 2 |
| 26. | अ. असत्यम्<br>ब. सत्यम् | 2 |
| 27. | अ. सत्यम्<br>ब. असत्यम् | 2 |
| 28. | अ. सत्यम्<br>ब. असत्यम् | 2 |
| 29. | अ. सत्यम्<br>ब. असत्यम् | 2 |
| 30. | अ. सत्यम्<br>ब. असत्यम् | 2 |
| 31. | अ. सत्यम्<br>ब. असत्यम् | 2 |
| 32. | काशयाश्वौ, जगती | 2 |

| | | |
|---|---|---|
| 33. | अ. अभ्यवहरासि<br>ब. क्रन्द | 2 |
| 34. | अ. कृ<br>ब. प्रथम | 2 |
| 35. | अ. तृतीया कर्मणि<br>ब. अङ्गादेश: | 2 |
| 36. | 'आत्मानं रथिनं विद्धि' इति मन्त्रः कठोपनिषदि उपलभ्यते। अत्र सम्पूर्णः मन्त्रः-<br>आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।<br>बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥ | 2 |
| 37. | पर्शुशब्दः अन्तोदात्तश्चेत् परशुः इति रूपं भवति।<br>अयं नियमः भरद्वाजशिक्षायाम् उपलभ्यते। | 2 |
| 38. | समासस्य अन्तस्य उदात्तस्वरो भवति। तत्र च विधायकं सूत्रं 'समासस्य' इति। | 2 |
| 39. | 'हि च' इति सूत्रस्य अर्थः भवति 'अप्रातिलोम्यार्थे हिशब्देन युक्तं तिङन्तम् अनुदात्तं न भवति।' इति। अत्र आ हि ष्मा याति इति उदाहरणम्। | 2 |
| 40. | रुद्रदेवस्य तनूः शिवा अघोरा अपापकाशिनी। तया तन्वा स रुद्रः अस्माकं स्तुतिकारिणां सुखं विस्तारयेत्। | 2 |
| 41. | 'यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूवुः' इत्यत्र यत्पदेन पृथिव्या ग्रहणम्। कृष्टयः इति शब्दस्यार्थः कर्षणकारिणः मानवाः इति। | 2 |
| 42. | क) आरण्यकनामकरणम्।<br>· आरण्यकपदव्युत्पत्तिः।<br>· अरण्याध्ययनादेतद् इति श्लोकः।<br>ख) आरण्यकमाहात्म्यम्।<br>· ग्रन्थमननस्थानम् अरण्यम्।<br>· आरण्यकञ्च वेदेभ्यः इति महाभारते।<br>ग) आरण्यके प्रतिपाद्या विषयाः।<br>· प्राणविद्याप्रतीकोपासनवर्णनम्। | 3 |

| | | |
|---|---|---|
| | निरुक्तादिषु नामान्तराणि। | |
| 43. | क) 'पूर्वे भूतपूर्वे' इति सूत्रस्यार्थः।<br>ख) सूत्रव्याख्या।<br>ग) उदाहरणसङ्गतिः।<br>वा<br>क) 'वा भुवनम्' इति सूत्रस्यार्थः।<br>ख) सूत्रव्याख्या।<br>ग) उदाहरणसङ्गतिः | 3 |
| 44. | तिङन्तस्वरे अनुदात्तस्वरनिषेधकानि त्रीणि सूत्राणि।<br>क) 'हि च' इति सूत्रं तदर्थश्च।<br>ख) 'छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम्' इति सूत्रं तदर्थश्च।<br>ग) 'उपसर्गव्यपेतं च' इति सूत्रं तदर्थश्च।<br>घ) 'तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम्' इति सूत्रं तदर्थश्च।<br>ङ) 'शेषे विभाषा' इति सूत्रं तदर्थश्च।<br>च) 'लोपे विभाषा' इति सूत्रं तदर्थश्च।<br>छ) 'किंवृत्तं च चिदुत्तरम्' इति सूत्रं तदर्थश्च।<br>ज) 'आहो उताहो चानन्तरम्' इति सूत्रं तदर्थश्च। --- इत्येतेषु त्रीणि। | 3 |
| 45. | रत्नधातमम् इति शब्दयुक्तः मन्त्रः -<br>अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।<br>होतारं रत्नधातमम्।।इति।<br>वा<br>रत्नानि दधाति इति रत्नधाः। रत्नोपपदे धाधातोः क्विपि अयं शब्दः निष्पन्नः। अतिशयने रत्नानि दधाति इति विग्रहे रत्नधा-शब्दात् तमप्प्रत्यये रत्नधातमशब्दः निष्पन्नः। ततः द्वितीयैकवचने रत्नधातमम् इति रूपम्। | 3 |

| | | |
|---|---|---|
| 46. | 'असंबाधं मध्यतो मानवानाम्' इति मन्त्रस्य सम्पूर्णं रूपं तावत् -<br>असंबाधं मध्यतो मानवानां<br>यस्या उद्वत प्रवतः समं बहु।<br>नानावीर्या ओषधीर्वा बिभर्ति<br>पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः।।इति।<br>वा<br>अत्र सरलार्थो भवति - या पृथिवी अबद्धा अपि मानवान् बध्नाति, यस्याः भूमिः वैचित्र्यपूर्णा, या बहुशक्तिसम्पन्नौषधिवृक्षान् धारयति इत्यादिः। | 3 |
| 47. | इच्छन्ती - इष्-धातोः शतृप्रत्यये स्त्रियां ङीपि इच्छन्तीशब्दः निष्पद्यते। ततः प्रथमैकवचने इच्छन्ती इति रूपम्।<br>आनट् - आङ्पूर्वात् नशिधातोः लुङि प्रथम-पुरुषैकवचने च्लिप्रत्यये च्लेः लुकि छन्दसि आडागमे आनट् इति रूपम्।<br>आवत् - अव्-धातोः लङ्-लकारे प्रथम-पुरुषैकवचने आडागमे आवत् इति रूपम्। | 3 |
| 48. | क) उपनिषद् इति नामकरणम्।<br>ख) उपनिषत्सु द्वितीया इयं सामवेदान्तर्गता।<br>ख) व्याख्यानबिन्दवः<br>· केनेषितं पतति इत्यतः आरभ्यते।<br>· उपनिषदः तात्पर्यम्।<br>· प्रतिपाद्यविषयवर्णनम्।<br>अथवा<br>क) शिक्षाशास्त्रस्य स्वरूपम्।<br>ख) शिक्षायाः प्रयोजनम्।<br>ग) मन्त्रो हीनः इति प्रसङ्गः।<br>घ) शिक्षाशास्त्रेतिहासः | 5 |

| | | |
|---|---|---|
| 49. | आहो उताहो इत्येताभ्यां युक्तस्य तिङन्तस्य अनुदात्तत्वनिषेधः 'आहो उताहो चानन्तरम्' इति सूत्रेण।<br>क) प्रसङ्गः।<br>ख) सूत्रव्याख्या।<br>ग) उदाहरणसङ्गतिः।<br>अथवा<br>क) वेदे अग्निस्तुतिः<br>ख) द्यावापृथिवीपुत्रः अयं देवानां प्रथमः।<br>ग) यज्ञसम्बद्धानि अग्नेः अभिधानानि<br>घ) निरुक्तदिशा अग्निः एकः देवः।<br>ङ) अग्निकार्यवर्णनम् | 5 |
| 50. | क) 'नमस्ते रुद्र मन्यव' इति मन्त्रस्य प्रसङ्गः सम्पूर्णं रूपं च।<br>ख) हे रुद्रदेव ते तवेत्यादिसान्वयार्थाः।<br>ग) रुद् दुःखं द्रापयति इति रुद्रः इत्यादिः व्याकरणगता टिप्पणी | 5 |
| 51. | पृथिवीसूक्तस्य सारः<br>क) इदं सूक्तम् अथर्ववेदे लभ्यते इत्यादिः प्रसङ्गः।<br>ख) सत्यादीनां धारयित्री।<br>ग) विचित्रधर्मिणां प्राणिनां फलप्रदायकस्य ओषधिवृक्षस्य चाधाररूपा।<br>घ) विश्वम्भरा विश्वधात्री सा।<br>ङ) भूमिखननिषेधादिवर्णनम्। | 5 |